प्रेमचंद की कहानियां – पशु-चित्रण

भैंरु लाल सेन [1]

[1] **सहायक आचार्य हिंदी विभाग, आचार्य श्री महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस आसींद , राजस्थान.**

ABSTRACT:

1906 – 1936 के मध्य धनपत राय द्वारा प्रेमचंद के नाम से लिखा गया साहित्य उन वर्षों का सामाजिक- सांस्कृतिक दस्तावेज है। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक के रूप में प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में कृषक जीवन, ग्राम्य संस्कृति, साहूकारी लूट एवं कृषकों का पशुओं के प्रति प्रेम चित्रण कर अपनी कहानियों में विशिष्ट भावों को स्थान दिया है। यह चित्रण भावात्मक है जो निःसंदेह आदिकाल से भारतीय संस्कृति का अंग रहा है।

KEYWORDS:

अदीब, जमाना, स्वत्व रक्षा, अधिकार चिन्ता, पूस की रात, नाग पूजा, पूर्व, संस्कार, बंदर, दो बैलों की कथा, वारदात।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
23rd February 2024	24th February 2024

विषय प्रवेश

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के ऐसे रचनाकार थे जिनका साहित्य – भारतीय जनमानस में हमेशा से लोक प्रिय रहा है। उनकी लिखी कहानियों ने हमेशा से ही पाठकों का भरपूर मार्गदर्शन व ज्ञानवर्धन किया है। प्रेमचंद द्वारा रचित हिन्दी – उर्दू कहानियों का अवलोकन करने के पश्चात् ज्ञात होता है कि, इन कहानियों में दलित-विर्मश की कहानियां, नारी चिंतन की कहानियां, ग्राम्य जीवन से संबंधित कहानियां, सामाजिक कहानियां, हिन्दू-मुस्लिम संबंधी कहानियां, देश प्रेम संबंधी कहानियां, पशु पक्षियों पर आधारित कहानियां आदि विविध पक्षों पर लिखी गई कहानियां निहित हैं।

पशु-पक्षियों पर आधारित कहानियां मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तिगत पशु-पक्षी प्रेम एवं ग्राम्य संस्कृति के सामाजिक- आर्थिक जीवन की धुरी होने के कारण वैशिष्ट्य को धारण किए हुए हैं जो उन्हें निरंतर प्रेरणा प्रदान करती रही हैं। इसका ठोस प्रमाण प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी की पुस्तक 'प्रेमचंद घर में भी' है, जिसमें प्रेमचंद के पशु प्रेम की जानकारी दी गयी है। इस पुस्तक से जानकारी मिलती है कि, वह अपनी गाय के लिए गोरखपुर के जिला कलेक्टर एक अंग्रेज से भी भिड़ गये थे। यह था प्रेमचंद का पशुओं के प्रति प्रेम व वफादारी। उन्होंने पशु-पक्षियों के माध्यम से अपने विचारों को पाठकों तक बाखूबी पहुंचाया है। प्रेमचंद की उपलब्ध 298 कहानियों का अवलोकन करने पर हमें पशु पक्षियों पर आधारित कई बेहतरीन कहानियां देखने को मिलती हैं, इन कहानियों के केन्द्र में कहीं न कहीं पशु-पक्षियों का योगदान रहा है।

प्रेमचंद की पशुओं को लेकर बनाई गई सर्वप्रथम प्रकाशित कहानी "अदीब" उर्दु पत्रिका के अप्रैल 1913 के अंक में सगे- लैल (लैला का कुत्ता) नामक शीर्षक से प्राप्त होती है। इस कहानी में कुत्ते की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह एक रोचक प्रेम पर आधारित कहानी है जिसमें लैला नामक एक प्रेमिका है, उसके दो प्रेमी हैं। वे दोनों ही लैला को प्राप्त करना चाहते हैं। परंतु कहानी का प्रमुख पात्र एक कुत्ता है जो इन दोंनों के बीच में आ जाता है। इस कहानी में कुत्ते का योगदान और भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

जमाना ऊर्दू मासिक पत्रिका के जनवरी 1920 के अंक में प्रकाशित कहानी "आत्माराम" में प्रेमचंद ने एक तोते को केन्द्र में रखकर कहानी की रचना की है। कहानी में महादेव नामक सुनार वेदो ग्राम में रहता है, उसके पास एक तोता है जिसे वह हर रोज सुबह घुमाने के लिए लेकर जाता है। एक दिन एक बालक पिंजरे को खोल देता है और तोता उड़ जाता है। महादेव तोते को पकड़ने का खूब प्रयास करता है। रात भर तोते को पकड़ने का प्रयास करता है जहां उसे एक पेड़ के नीचे मोहरों से भरा कलश मिलता है, सुबह होने पर तोता भी पिंजरे में आकर बैठ जाता है। प्रस्तुत कहानी में महादेव सुनार और तोते के द्वारा जीवन के यथार्थ की चर्चा की गई है। कहानी में महादेव द्वारा तोते को पकड़ने का पागलपन बेचैनी, लोगों द्वारा महादेव का उपहास उड़ाना बाखूबी उकेरा गया है। यह मनुष्य के पक्षी प्रेम का यथार्थ चित्रण है। साथ ही प्रेम में निहित आनंद का भाव भी है।

"स्वत्व रक्षा' कहानी 'माधुरी हिन्दी मासिक पत्रिका के जुलाई 1922 के अंक में प्रकाशित हुई थी, में प्रेमचंद एक घोड़े को केन्द्रीय पात्र बनाकर हास्य बोध की उत्कृष्ट कहानी की रचना करते हैं। इस कहानी में एक घोड़े द्वारा किस तरह अपने स्वत्व की रक्षा की जाती है, वह बड़े ही हास-परिहास के रूप में चित्रित किया गया है। कहानी के अनुसार मीर दिलावर अली के पास एक बड़ी रास का कुम्मैत घोड़ा है, यहां घोड़ा केवल पशु ही नहीं है बल्कि वह देखता है, सोचता है, विचार करता है, जिद करता है। वह स्वामी भक्त है तथा इतवार के दिन कोई भी कार्य नहीं करता है। यहां घोड़ा रविवार की बारात ले जाने के लिए असमर्थ रहता है। घोड़े के भावों के आधार पर हम कहानी को हास्य व्यंग की चाशनी में डूबा हुआ पाते हैं।....

माधुरी हिन्दी मासिक पत्रिका के अगस्त 1922 के अंक में प्रकाशित कहानी 'अधिकार चिन्ता' में प्रेमचंद एक बार फिर अपने प्रिय पात्र कुत्ते को नायक बनाकर प्रस्तुत करते हैं। कहानी में टॉमी नामक कुत्ता किस प्रकार अपने अधिकार की चिन्ता करता है, खूबसूरती के साथ दर्शित किया गया है। टॉमी को प्रतिद्वन्दी की चिन्ता, राजा बनने की आकांक्षा, नदी को पार करके एक रमणीय स्थल में प्रवेश करना आदि कई घटनाएँ कहानी में रोमांचक रुप में घटित होती हैं। जिसका नायक टॉमी ही है।

"पूस की रात" कहानी को सन् 1930 में प्रेमचंद द्वारा माधुरी में प्रकाशित किया गया था। इस कहानी का कथ्य किसान जीवन से सबंधित है- कहानी का मुख्य पात्र हलकू (किसान) अपने खेत की रखवाली कर रहा है और उसका साथ दे रहा है उसका कुत्ता जबरा। हलकू के पास भरी ठण्ड में कंबल खरीदने के लिऐ रुपये नहीं हैं, लेकिन खेत की रखवाली करना भी निहायत जरूरी था। सो वह मन मसोस कर खेतों का रुख करता है। उसके पीछे-2 उसका कुत्ता जबरा भी चलता है। हलकू को भयंकर ठण्डी लग रही है सो वह जबरे को अपनी गोद में चिपटा लेता है। यद्यपि जबरा में से उसे दुर्गंध का अहसास हो रहा है। कहानीकार ने यह अदृश्य भाव उत्पन्न किया है कि, हलकू को जबरे को अपनी, देह से चिपकाने में सुख का अनुभव हो रहा है। यह सुख वस्तुतः उसके अकेलेपन, अंधकार और ठंड की रात में जबरा के साथ के कारण मन में पैदा हुआ था। हलकू के हृदय से ऊंच-नीच का ही नहीं बल्कि मनुष्य और पशु का भेद भी मिट गया था। वह कुत्ते को उतना ही आत्मीय समझ रहा था

जितना वह अपने रिश्तेदार और मित्र को समझता था। हलकू की गरीबी, अभावों ने उसकी आत्मा की पवित्रता को मलिन नहीं किया था इसीलिए वह एक जानवर के साथ भी बराबरी और आत्मीयता का व्यवहार कर रहा था। यही कारण था कि, वह उसे अपना मित्र बना सका। जबरा के प्रति हलकू की इस भावना का असर जबरा पर भी पड़ा था और वह भी हलकू के प्रति अधिक वफादार हो गया था।

जबरा एक कुत्ता है जो खेत पर हल्कू के साथ रहता है। यहां उसकी स्वामी भक्ति खेत नष्ट होते देखकर अपने स्वामी को सावधान करने की कोशिश में भौंक-भौंक कर दिखाने में झलकती है, जानवरों को भगाने की उसकी कोशिश और अंत में असफल हो जाने पर पस्त होकर लेट जाना उसको काफी जीवंत पात्र बना देता है। कुत्ते की स्वामी भक्ति वैदिक काल से ही प्रामाणिक रही है। युधिष्ठिर का कुत्ता तो स्वर्गारोहण के लिए यात्रा में अंत तक रहा, यहां तक की युधिष्ठिर के बिना कुत्ते ने स्वर्ग में प्रवेश करने से मना कर दिया है। कुत्ते ने यह प्रतिष्ठा और मनुष्य का विश्वास अपनी अनवरत वफादारी से अर्जित किया है। अपनी मौत की परवाह किये बिना वह अपने मालिक के प्रति हर हाल में वफादार बना रहता है।

कुत्ते की वफादारी का यथार्थ चित्रण 'पूस की रात' में प्रेमचंद ने किया है। भयंकर ठण्ड की रात में जबरा हलकू के साथ खेत में रखवाली करने जाता है। जबरा को बड़ी ठंड लग रही है। तब हलकू जबरा से कहता है कि तू मेरे साथ यहा क्यूं आया? अर्थात मैं तो खेत की रखवाली के बन्धन से बंधा हूं परंतु तुम तो आजाद हो। यहां जबरा चूं-चूं करता हुआ भी टस से मस नहीं होता है बल्कि खेत पर ही डटा रहता है।

'पूस की रात में जबरा, गरीब लोगों का दिल, दिलावर और सहानुभूति ये सभी सत्यभाव स्वरूप चरित्र है। प्रेमचंद ने इस कहानी में पशु का मनुष्य के प्रति समर्पण उकेरा है जो आदर्शवादी यथार्थ का सही चित्रण करती है।

उर्दू पत्रिका' तहजीबे-निस्वां 'के अगस्त 1922 के अंक में प्रकाशित कहानी, 'नाग पूजा' में प्रेमचंद इस बार सांपो को लेकर एक चमत्कारी कहानी की रचना करते हैं। वैसे भी हिन्दू समाज में सावन की पंचमी को नाग पूजने की परम्परा है। कहानी में तिलोत्तमा नामक स्त्री पात्र के पति को नाग काट लेता है। ऐसा तिलोत्तमा के साथ दो बार होता है तथा दोनों ही बार वह विधवा हो जाती है। अंत में तिलोत्तमा का विवाह ढाका विश्वविद्यालय के अध्यापक दयाराम के साथ होना निश्चित होता है। दयाराम सांपो के विषय में जानते थे तथा उनको सांपो के आचार-व्यवहार के संबंध में सम्यक ज्ञान था। शादी के पश्चात एक दिन साँप तिलोत्तमा के रुप में दयाराम पर हमला करता है। परंतु दयाराम तिलोत्तमा पर पिस्तौल से हमलाकर तिलोत्तमा के शरीर में प्रवेशित सांप की आत्मा का खात्मा करता है व तिलोत्तमा को इस कष्ट से मुक्त करता है। प्रेमचंद की इस कहानी में भरपूर रहस्य, रोमांच व अंधविश्वास को प्राथमिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण एवं मान्यताओं को इसमें प्रमुखता दी गई है।

'माधुरी' हिन्दी मासिक पत्रिका के दिसम्बर 1922 के अंक में प्रकाशित 'पूर्व संस्कार' नामक कहानी में बछड़े से बैल बने धर्मपरायण शिवटहल नामक पात्र के द्वारा एक अद्भुत कहानी की रचना देखने को मिलती है। धर्म की राह पर चलने वाला शिवटहल नामक पात्र एक अपराध के कारण बछड़े के रूप में अपने ही भाई रामटहल के घर जन्म लेता है। इस बछड़े के रूप में उसका नाम 'जवाहर' रखा जाता है। एक महात्मा द्वारा इस बछड़े का भविष्य बताया जाता है कि, अगर यह 6वां वर्ष पार कर लेगा तो इसके जीवन में कोई कष्ट नहीं है। जवाहर की अवस्था ढाई वर्ष की होने पर है।

कुछ ही समय में वह बछड़े से बैल हो जाता है। परन्तु छठवां वर्ष आते ही जवाहर अपना पूर्व जन्म का प्रायश्चित पूर्ण कर निर्वाण पद को प्राप्त होता है। क्योंकि पूर्वजन्म में शिवटहल ने अपनी व अपने भाई की पूंजी को, धर्म के कार्यों में लगाकर नष्ट कर दिया था, इसी परिणामस्वरूप वह रामटहल हुई हानि की पूर्ति करने हेतु बछड़े के रूप में जन्म लेकर भरपाई करता है।

'पूर्व संस्कार' कहानी मूलतः हिन्दू धर्म के कर्म पुरुषार्थ को केन्द्र में रखकर लिखी गई है कि, व्यक्ति द्वारा किये गये उसके कर्मों का परिणाम उसे न केवल इहलोक में बल्कि पुनर्जन्म लेकर भी चुकाना पड़ता है। व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम से उऋण नहीं हो सकता है, जो फसल उसने बोई है वह तो उसे काटनी ही पड़ेगी। इसी भाव को सारांश के रूप में प्रेम चन्द्र कहानी के पात्र रामटहल से कहलवाता है कि, "ऐसे धर्मात्मा प्राणी को जरा से विश्वासघात के लिए इतना कठोर दण्ड मिला तो मुझ जैसे कुकर्मी की क्या दुर्गति होगी। बैल का जन्म लेकर ऋण चुकाने का संदेश प्रेमचंद ने बाखूबी समाज को प्रदान किया है।

"सैलानी बंदर" नामक कहानी जो माधुरी हिन्दी मासिक पत्रिका के फरवरी 1924 के अंक में प्रकाशित हुई थी, में प्रेमचंद इस बार एक बन्दर को पात्र बनाते है जो जीवनदास नामक मदारी और बुधिया की आजीविका का एक मात्र सहारा है। बंदर अपनी लीलाओं के कारण पकड़ा जाता है। मदारी और उसकी पत्नी द्वारा दस रुपये का हरजाना नहीं दे पाने के कारण वह बंदर को छुड़ा नहीं पाते हैं। कहानी में विभिन्न घटनाक्रमों का वर्णन है। मदारी बंदर के इंतजार में मर जाता है और उसकी पत्नी बुधिया पागल हो जाती है। लेकिन अंत में बंदर छूटकर आता है और वह बुधिया को पहचान जाता है। प्रेमचंद कहानी का अंत इस प्रकार करते है कि-" लोग बुधिया के प्रति बंदर का यह प्रेम देखकर कहते हैं कि, यह बंदर नहीं, हनुमान जी हैं"।

"हंस हिन्दी मासिक पत्रिका के अक्टूबर 1931 के अंक में प्रकाशित कहानी 'दो बैलों की कथा' आज भी अपने सुन्दर कथ्य के कारण हिन्दी साहित्य में अपना सर्वोच्च स्थान रखती है। कहानी के मुख्य पात्र हीरा मोती नामक दो बैल हैं, इन बैलों में अद्भुत भाईचारा व प्रेम है। इन बैलों के मालिक का साला अपने यहां पर बैलों को लेकर आता है, नयी जगह व नये आदमी की देखकर दोनों बैल भागकर अपने मालिक के पास आकर ही दम लेते हैं। इस कहानी में बैलों के माध्यम से प्रेमचंद अपने विचार समाज के समक्ष रखते हैं। यह कहानी सांकेतिक भाषा में यह संदेश देती है कि, मनुष्य हो या कोई भी प्राणी स्वतंत्रता उसके लिए बहुत महत्व रखती है। स्वतंत्रता को पाने के लिए लड़ना भी पड़े तो बिना किसी हिचकिचाहट के लड़ना चाहिये।

दो बैलों की कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने नीति विषयक मूल्यों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। जिनकी सदियों पहले विवेचना प्रस्तुतीकरण कौटिल्य ने चाणक्य नीति में किया था। जैसे:- "विपत्ति के समय हमेशा मित्र की सहायता करनी चाहिये"। कहानी के भाग-3 में मटर के खेत में चरते समय मोती पकड़ा जाता है, हीरा मेड़ पर खड़ा होने के कारण भाग जाता है। मोती के खुर कीचड़ में धंसने लगते हैं, हीरा ने देखा कि संगी संकट में है तो वह उल्टा लौटता है रखवाला उसे भी पकड़ लेता है। कहानी के भाग-4 में कांजी हाउस में बंद हीरा कांजी हाउस से भागने के लिए अपने सींग से दीवार गिराने का प्रयास करता है तो चौकीदार उसे रस्सी से बांध देता है। मोती दीवार गिराने में सफल रहता है, वह हीरा की बंधी रस्सी को तोड़ने का असफल प्रयास करता है। हीरा मोती को भागने की सलाह देता है परंतु मोती इसे अस्वीकार कर हीरा के साथ रहने का निर्णय करता है। कहानी में एक नीति विषयक चित्रण को भी स्थान दिया गया है। आजादी के लिए हमेशा सजग एवं संघर्षशील रहना चाहिये। कहानी के भाग-5 में प्रेमचंद ने बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। कांजी हाउस की नीलामी में हीरा मोती को दढ़ियल व्यक्ति द्वारा खरीद लिया जाता है। परंतु रास्ते में उनके मालिक का घर आने पर मोती दढ़ियल को सींग दिखा कर उसके पीछे दौड़ता है और उसे भगा देता है। मोती का यह रूप विजयी शूर की भांति था कि मौका मिलते ही अपनी आजादी कैसे प्राप्त की जाये। वह इस बारे में भी पूर्णतः सजग था कि यदि आज दढ़ियल को नहीं भगाया तो हो सकता है कि दढ़ियल हम पर छुरी चलायेगा।

प्रेमचंद की पशु-पक्षियों पर आधारित अंतिम कहानी के रूप में 'वारदात ऊर्दू कहानी संग्रह मार्च 1931 में संकलित कहानी "कोई दुखन हो तो बकरी खरीद लो" में देखने को मिलती है। इस कहानी में प्रेमचंद "बकरी को लेकर उपस्थित होते हैं। कहानी में दूध की समस्या से ग्रसित कथावाचक गाय खरीदता है। तत्पश्चात बकरी खरीदता है। कहानी में बकरी को लेकर कथावाचक व बकरी के बीच कई प्रकार के हास्यबोध दर्शाने वाले मनोरंजक दृश्य उपस्थित होते हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में सभी प्रकार के पशु पक्षियों को लेकर उच्च कोटि की कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियों में पुरुष पात्र की तरह ही पशु पक्षी भी कहानियों में बोलते हुए नजर आते हैं, वे सब जानते हैं, समझते हैं वे स्वामीभक्त हैं जो अपने स्वामी के लिऐ सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए सदैव तत्पर हैं। पशुओं में दया, परोपकार, प्रतिकार जैसे भाव भी प्रदर्शित होते हैं। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के केन्द्र में पशु-पक्षियों को रखकर समाज को सन्देश प्रदान करने का सफल प्रयास किया है।

REFERENCES

1. शिवरानी देवी :- प्रेमचंद : घर में भी

2. रामविलास शर्मा : प्रेमचंद और उनका युग

3. डॉ. लक्ष्मीधर दराः कथासाहित्य : उपन्यास और कहानियां

4. कमल किशोर गोयनका : प्रेमचन्द कहानी रचनावली भाग -3

5. कमल किशोर गोयनका :- प्रेमचन्द - कहानी रचनावली भाग-6

6. कमल किशोर गोयनका :--प्रेमचन्द विश्वकोश

7. कृष्ण कुमार सिकरवार :- विविधा